प्रो. प्रदीप भार्गव
निदेशक, गोविन्द बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूंसी, इलाहाबाद
मो 9415237822

वंदे मातरम्

अवधूत

स्वतंत्रता दिवस पर राजा प्रातः काल योगासन करने के बाद वंदे मातरम् गुनगुना रहा था। अभी लालकिले की प्राचीर से बोलने में तीन घण्टे शेष थे। प्रातः जल्दी उठना उसकी दिनचर्या थी। वंदे मातरम्। सुजलां-सुफलाम् मलयज शीतलाम्। अरे, तभी बेताल उसके कंधे पर आ बैठा और बोला मैं तेरी देशभक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। तू अपने काम के लिए बहुत समर्पित है। नित नई घोषणाएं करता है। आज आज़ादी का दिन है। वन्दे मातरम् का दिन है। आज़ादी का दिन है। आज देश आज़ाद हुआ था। हम आज़ाद हुए थे। पर क्या हमारा सुजलाम्-जल, सुफलाम्-फल और मलयज शीतलां-हवा आज़ाद है? क्या सबको जल, फल और हवा पाने की आज़ादी है? प्रकृति की देन को कोई बंधक तो नहीं बना रहा राजन्? अगर ये ही बंधक हो गए तो मातृभूमि क्या होगा? वंदे मातरम् किसको बोलेंगे? ये बहुत कठिन समय है राजन्। अगर तू समय पर नहीं चेता तो अनर्थ हो जाएगा। आज़ादी का क्या अर्थ रह जाएगा? आ आज इस गीत को समझें और ढूँढे कि इस गीत का और आज़ादी का क्या रिश्ता है। तुझे जल, फल, वायु की आज़ादी की कथा सुनाता हूं। सुन। अगर तू बीच में बोला तो तेरे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे।

देख राजन्, सुजलाम् होता है, सुंदर जल, पवित्र जल। ऐसा जल या तो हिमालय की कंदराओं में आज़ाद है, या फिर मिनरल वॉटर की बोतलों में बंद। या फिर दूर कहीं गांवों में आज़ाद है जो शहर की जद से बाहर हैं, या रेगिस्तान के तालाबों में जहां बरसात का पानी इकट्ठा होता है। ऐसे तालाबों को लोक बहुत सहेज कर रखता है। देखो! कितना कुछ बदला है राजन। गर्मियों में सेठ लोग जल सेवा करते थे, पौशाला या प्याऊ लगाते थे। अब यही सेठ मिनरल वॉटर बेचते हैं। नदियों का पानी तो मैला हो गया है। प्रयाग के पानी में मल-मूत्र है, कानपुर की चमड़े की सफाई से निकला क्रोमियम है। डुबकी लगाने से पहले सोचना पड़ता है। टेरी डैम में बंधा पानी न छेड़ें, तो कोलिफॉर्म और क्रोमियम से माघ मेले में स्नान करें।

हे राजन् वेदों में जल की बड़ी महिमा है। वेदों में वर्णन है : जल की नदियाँ बह रही हैं, मानो वो दूध में शहद मिला रही हैं। जो जल सूर्यकिरण से शुद्ध बनता है अथवा जिसकी पवित्रता सूर्य करता है, वो जल हमारा आरोग्य सिद्ध करे। जिन नदियों में हमारी गौएँ जल पीती हैं और जिनके लिए हवि बनाया जाता है उनके जल का गुणगान करना चाहिए। जल में अमृत है, जल में औषध है, जल के शुभ गुण से घोड़े बलवान बनते हैं और गौएँ भी बलवती बनती है (अ., का. 1, सू. 4, मं. 2)।

हे राजा, हर जल की अलग महिमा है। मेघों से प्राप्त जल नदी, समुद्र, जलमय प्रदेश, मरुदेश, कुएँ और बावड़ी से प्राप्त जल, कुंभ में रखे जल के गुण अलग-अलग होते हैं। जिस जल पर सूर्यकिरण पड़ती है और नहीं पड़ती है, बहती नदी और ठहरे तालाब, पुष्प पराग से प्लावित जल और जिस जल में गौएँ पानी पीती हैं, उनका गुणधर्म अलग-अलग होता है। जल अमृत होता है और जल में औषध होती है। जल आरोग्य करता है, बल और प्रजनन शक्ति देता है।

हमारी प्रगति होने के बाद, हे राजन् कौन ऐसा जल-स्त्रोत हैं, जहां का जल विषाक्त न हुआ हो। उसमें न अब अमृत है, न औषध है। अब जल में पेपर मिलों से निकला पानी, टैनरियों से निकला क्रोमियम युक्त पानी, रसायन, हैवी मेटल्स और सीवरेज का कोलीफार्म युक्त पानी है। भूजल में फर्टिलाइज़र और पेस्टीसाइड के खतरनाक रसायन हैं। पहले पानी औषध था अब पानी पीने पर औषधि लेनी पड़ सकती है।

हे राजन्, अब जल को साफ़ करने की विशाल इंडस्ट्री खड़ी हो गई है। मिनरल वॉटर की इंडस्ट्री अब 6 करोड़ की है और बढ़ रही है। और न जन कितने प्लास्टिक का कचरा बना रही है। और एक्वा गार्ड और आर.ओ. का बाज़ार अभी 34 करोड़ का है और दिन रात प्रगति कर रहा है। जो मेघों का जल प्राणिमात्र को एक समान मिलता था (अ. का. 1, सू. 1, मं. 9)